ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगे

बाल पत्रिका

मई–जून 2019

इस बार

खेल खिलाड़ी
5 पटियाला टूर

उड़ान
7 बाजरे की मीठी रोटी
9 भरबूलया
12 कोई राजा नहीं
13 जंगल में मंगल
मोटूलाल
12 बादल और लड़की
13 हाथी और मोहन

ज्ञान विज्ञान
14 डेंगू

कलाकारी
17 चंगा पौ

बात लै चीत ले
19 विस्थापन 'कठुली पादड़ा'

22 माथापच्ची
हीहीही–ठीठीठी

अंकिता मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–रोशनी

23 कुछ हमने बढ़ायी,
कुछ तुम बढ़ाओ

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – सुमन सैनी, कक्षा–4, राजकीय विद्यालय अल्लापुर
वर्ष 9 अंक 107–108

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

परिचय

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

सविता मीना, कक्षा–8, उदय पाठशाला जगनपुरा

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरूआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरूआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरूआत की गई। ये तीनों उदय पा. ठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानव. रों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुंचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

खेल खिलाड़ी

पटियाला टूर

चेतना बैरवा, उम्र–11 वर्ष, समूह–सूरज

एक लड़की जो अपने ही स्कूल की सीनियर लड़कियों को स्कूल की डोली पर से खेलते हुए देखा करती थी। एक दिन पीटीआई सर ने उसे देखा और उससे पूछा, ''मैं बहुत दिनों से देख रहा हूँ, क्या तुम खेलना चाहती हो?'' कक्षा 7 में पढ़ने वाली लड़की के लिए ये बड़ी खुशी की बात थी। उसने समय गवाए बिना तुरंत हाँ कर दी।

तब वह अपने से 2 और 4 साल सीनियर लड़कियों के साथ मैदान पर थी। हर मामले में छोटी होते हुए भी उसका उत्साह किसी से कम नहीं था वह डरी नहीं और अपनी चुस्ती–फुर्ती के कारण बास्केटबॉल के लिए प्रथम 5 प्लेयर में उसका चयन हो गया।

यह उसके खेल जीवन का आरंभ था। जिला स्तर पर खेलने के बाद उसे लगने लगा कि वह इस खेल में ज्यादा कुछ कर नहीं पायेगी। इसलिए वापस आकर उसने अपनी मैडम से बात की। मैडम ने कहा, ''अगर ऐसा है तो तुम हैंडबॉल खेलो जो कि बास्केटबॉल जैसा ही है।''

उसे अपनी सही लाईन मिल चुकी थी। अगले ही साल उसका चयन राष्ट्रीय स्तर के लिए हो गया। उस समय वह जिले की तरफ से इस स्तर पर खेलने वाली पहली हैंण्डबॉल महिला खिलाड़ी बनी।

खेल बच्चे को खेलने के साथ–साथ और भी बहुत कुछ सिखाता है। हमेषा की तरह एक बार वह राष्ट्रीय स्तर पर खेलने के लिए पटियाला पंजाब गई तो वहाँ उनकी टीम को एक स्कूल में ठहराया गया। उनके साथ 2 टीचर और टीम मैनेजर भी गये थे। वे सब बच्चों के साथ ही रूके थे। टीम को खाना खिलाना और बच्चों का ख्याल रखना उनकी जिम्मेदारी में शामिल था।

एक मैच के बाद जब टीम अपने रूम में वापस आई, थोडा आराम करने के बाद मैडम ने कहा, ''चलो पहले खाना खाकर आते हैं फिर आराम करना। परन्तु एक लड़की जो उदयपुर से थी वो बोली, ''मुझे नहीं जाना आप मेरे लिए यहीं कुछ ले आना। मेरे पैर में लगी है और मुझे कल के मैच के लिए भी फिट होना है।''

मैडम बोली, ''नहीं, हम तुम्हे अकेला छोड़कर नहीं जा सकते और मार्केट भी दूर है। काफी देर बाद तयः हुआ की इसको छोड़ देते हैं और रूम के बहार से ताला लगा जाते हैं। यह एक गलत फैसला था जो उन्हें बाद में समझ आया। ताला लगाकर सब चले गये। जब सब वापस लोटे तो ताला खोलते ही उदयपुर वाली लड़की मैड़म से लिपट कर जोर–जोर से रोने लगी। सभी लड़कियां अंदर आई तो अंदर का हाल देखकर स्तब्ध थी। सबके बैग खुले थे। सारा सामान बिखरा पड़ा था। सभी घबरा गई कि हुआ क्या? ताला बंद था फिर भी ये सब कैसे हो गया?

सबसे पहले रोती हुई लड़की को पानी पिलाया। उसे विश्वास में लिया, उसके बाद पूछा आखिर हुआ क्या? ये सब किसने और कैसे किया?

लड़की ने बताना शुरू किया, ''कुछ लड़के रोशनदान से जाली निकाल कर नीचे आये और सारे पैसे, कपड़े निकाल कर ले गये।''

वह बहुत घबराई हुई थी। मैडम ने पूछा, ''तुम्हे तो कोई नुकसान नहीं पहुँचाया?''

लड़की बोली, ''नही, मैं इतना डर गई थी कि डर से आंख बंद कर चुपचाप लेटी रही।'' मैडम ने उसे गले लगाया और उसकी सलामती की खैर मनाई।

अब हमारे पास पैसे तो थे ही नहीं ऊपर से कुछ के पास तो कपड़े भी नहीं थे। थोडी देर में सब को खबर लग चुकी थी। पूरा पटियाला स्कूल में मौजूद था। पुलिस को भी बुला लिया था। पुलिस अपना काम करती रही लेकिन वहाँ के लोगो ने बहुत साथ दिया। महिलाओं ने सभी को पटियाला सूट सिल के दिये। पैसे दिए गये, खाने की व्यवस्था की गई। घर जाने का किराया भी दिया। सबसे बड़ी बात पूरे पटियाला के लोगो ने इस षर्मनाक हादसे के लिए बहुत शर्मिन्दगी जताई और बार–बार माफी मांगी। इससे ज्यादा वे कर भी क्या सकते थे।

हमने अपने बाकी के मैच खेले। सुपर लीग तक का सफर तय करने के बाद टीम वापस आ गई। रास्ते में जब सब पीछे छूटता जा रहा था तो मै सोच रही थी कि अगर मैडम ने लड़की पर भरोसा किया होता और बाहर से ताला लगाने की बजाय उसे अन्दर से कुण्डी लगाने की सलाह दी होती तो ना तो किसी को बहार से ताला बंद दिखता और ना कोई चोरी करने आता। और अगर फिर भी ऐसा होता तो कम से कम वह बहार आकर शोर तो मचा ही सकती थी।

ममता शर्मा, शारीरिक शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया।

बाजरे की मीठी रोटी

एक बार की बात है। एक नदी थी। उस नदी में बहुत सारी मछलियाँ रहती थी पर पानी की कमी के कारण वे मरने लगी थी। एक दिन बहुत तेज बरसात आई। बरसात इतनी ज्यादा थी कि रोड़ पर से वाहन नहीं निकल पा रहे थे। काफी देर बाद बरसात रूकी। पर तब भी बारिश की बूंदे तो आ रही थी। लोग घरों में से निकल कर नदी को देखने गये। सभी लोग नदी को देखकर कहने लगे, ''ऐसी नदी तो आज से पहले कभी नहीं आई।'' आसमान में बादल छा रहे हैं और रोड़ पर इतना पानी भर गया कि कार से भी नहीं निकला जा रहा था।

विकास, कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

तभी दूसरा आदमी बोला, ''अरे! तू तो इसकी बात कर रहा है हमारे खेतों में जाकर देखो तो सही क्या हाल हो गया है।'' सब आदमी खेतों में जाकर देखने लगे। एक आदमी अपने आम के पेड़ को देखने गया। सब लोग पानी देखकर खुश हुए और बुआई करने लग गये। बरसात के कारण घास भी अच्छी होने लगी। सब पेड़ हरे–भरे हो गये। कुछ दिन बाद खेत भी हरे–भरे हो गये। लेकिन इसके बाद फिर बारिश ही नहीं आई।

सब किसान परेशान हो गये और कहने लगे, ''हे! भगवान थोड़ी सी बरसात करवा दो।'' परन्तु बरसात नहीं आई। बारिश की कमी के कारण तैयार हो रही फसल

वापस सूखने लग गई और गाँव में अकाल पड़ने की संभावना होने लगी। अब काम तो कुछ था नही ंतो गांव में बैठकर लोग बारिश के आने की बातें करने लगे। बा. रिश तो आई नहीं पर जोर की आंधी आ गई। एक आदमी आंधी में उड़ गया और एक पेड़ में जाकर फंस गया। गाँव के बहुत सारे आदमी वहाँ आये और उस आदमी को नीचे उतारा तथा उसे घर पहुँचाया। इस आदमी के पास ही सब घर में बैठ गये। यह आदमी लोगों को बरसात के आने की सूचना देता था।

वह आदमी बोला, ''तुम अपने घर जाओ और काम करो।''

सब आदमी बोले, ''हम घर जाकर भी क्या करेंगे। हमें कुछ काम तो है ही नहीं। बरसात आती तो काम करते।''

वह आदमी बोला, ''आज बरसात जरूर आयेगी। मुझे उड़ते समय ऐसा लगा जैसे मैं बरसात के पानी में बह रहा हूँ।'' वे सब आदमी घर से बाहर निकले तो देखा की आसमान में बादल ही बादल छा रहे हैं और थोड़ी ही देर में बहुत जोर की बरसात होने लगी। सब लोग बहुत खुश हुए। फिर उन गरीब किसानों की खेती वापस से हरी–भरी हो गई। उन्होंनें खेत में निंदाई की। एक महिने के भीतर सबके खेतों की निंदाई पूरी हो गई। महिने भर में बाजरे की कटाई हुई और मशीनों से बाजरा निकलवाया। सब अपने घर पहुँचे और बाजरे की रोटी बनाई। रोटी को खाकर सब लोग बहुत खुश हुए और कहने लगे कि हमें तो लगता नहीं था कि बरसात आयेगी और हम बाजरे की रोटी खायेंगे। बाजरे की रोटी तो अबकी बार ही खाई है। इतनी मीठा बाजरा तो पहले कभी नहीं हुआ।

सफेदी, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

चेतना मीना, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

भरबूलया

बलराम प्रजापत, कक्षा–6, उदय ससामुदायिक पाठशाला फरिया

बात उस समय की है, जब मैं अपनी कक्षा में पढ़ा रहा था, तभी अचानक एक तेज भरबूलया आया। जिससे हमारे सामान उड़ गये, और बच्चे डर गये, तभी आरती और सुनीता ने कहा, ''सर इस भरबूलया में भूत रहता है।''

मेने कहा, ''भूत! इसमें, यह बात तुमको किसने बताई?'' इस पर सभी बच्चों का एक मत हो गए।

सभी कहने लगे, ''हाँ, सर इसमें भूत रहता है। सर हमारे मम्मी पापा ने कहा है, और हमने देखा है।''

''कैसा होता है?'' मैनें कहा।

''सर, ऐसे थोड़े ही दिखाई देता है, यह तो किसी के लग जाता है, फिर वह आदमी के शरीर में चला जाता और वह आदमी पागल हो जाता है।'' कई बच्चों ने जवाब दिया। बच्चे कहते रहे। '' सर हमारे गाँव में एक आदमी के भी भूत लग गया था।''

मैने कहा, ''क्या हम इस भूत को देख सकते हैं?''

सुनीता ने कहा, ''सर, ऐसे थोड़े ही दिखाई देता है। अगर भरबूलया में नमक और मिर्ची ढ़ाल दे तो उसमें से भूत निकल जाता है और हम भूत को देख सकते हैं।''

मैने कहा, ''तो कल मैं अपने घर से नमक मिर्ची लाऊंगा और हम सब भूत को देखेंगे।'' कुछ बच्चों ने हाँ कही तो कुछ बच्चे डर गये। डरने वाले बच्चों ने कहा,

''सर हम तो कमरे में चले जायेंगे'', कुछ बोले, ''सर हम तो देखेंगे कैसा होता है भूत।'' मैने भी कह दिया, ''ठीक है, जिसका जैसा मन हो कर लेना।''

दूसरे दिन मैं नमक और मिर्ची लेकर आया। बच्चों ने आते ही मुझसे पूछा, ''क्या सर आप नमक मिर्ची ले आये?'' मैने हाँ कही तो बच्चों में उत्साह भर गया और कहने लगे आज हम भरबूलया का भूत देखेंगे। तभी लंच में अंकित को दूर एक भरबूलया दिखाई दिया वह भाग कर मेरे पास आया और कहा, ''सर देखो वह भरबूलया आ रहा है।''

आरती, उम्र–10 वर्ष, समूह–रंगोली

मैने सभी बच्चों को बुलाया और कहा, ''आओ हम आज भरबुलया का भूत देखेंगे।'' मै नमक मिर्ची लेकर भरबुलया की तरफ गया। कुछ बच्चे मेरे पीछे–पीछे आ गये तथा कुछ बच्चे दूर से इस दृश्य को देख रहे थे। मैनें उस भरबुलया के पास जाकर उसमें नमक मिर्ची डाल दी पर उसमें कोई भूत नहीं निकला और भरबुलया आगे निकल गया। सभी बच्चे चुप हो गये।

मैनें कहा, ''देखो नहीं था ना इसमें भूत?'' बच्चे थोड़ी देर मेरी तरफ देखते रहे। शायद बच्चे सोच रहे थे की मम्मी पापा तो झूठ नहीं बोल सकते और सर ने जो किया वह हमारे सामने है। अब किसको सही माना जाये? तभी अचानक सुनीता ने कहा, ''सर आप जो मिर्ची और नमक लाये थे वह कम थी। वह कम चरपरी (तीखी) भी हो सकती है।''

सभी बच्चों ने सुनीता की बात का समर्थन करते हुए कहा, ''सर अगर नमक–मिर्ची ज्यादा होती तो भूत जरूर आता।'' अब बच्चों के इन सवालों पर मैं भी खुद को निरूत्तर समझ रहा था और सोच रहा था कि अब कैसे इनको समझाऊं? तभी विचार आया और मैने बच्चों से कहा, '' अब हम क्या कर सकते हैं?''

दिलखुश बोला, ''सर हम कल अपने–अपने घर से थोड़ी–थोड़ी नमक मिर्ची लकर आयेंगे। जिससे बहुत सारी नमक मिर्ची हो जाएगी। तब हम आसानी से भूत को देख सकेंगे।'' सभी बच्चों ने दिलखुश की बात का जोर षोर से समर्थन किया। सारी कक्षा में हाँ, हाँ, हाँ की आवाज सुनाई दे रही थी। मैने कहा, ''ठीक है आप सभी कल अपने–अपने घर से थोड़ी–थोड़ी नमक–मिर्ची लेकर आना।'' सभी बच्चो

में काफी उत्साह था और सोच रहे थे कि कल वे सब भूत को देख लेंगे। कोई कहता कि, ''मैं अभी जाते ही नमक–मिर्ची अपने थेले में रख लूंगा।'' कोई कहता कि, ''में तो थेली में लाऊंगा।'' इन्ही बातों के बीच स्कूल की छुट्‌टी हो गई।

सुबह जब बच्चे आये तो जो भी मिलता कहता, ''सर मैं नमक ले आया।'' बच्चे आपस में झुंड बनाकर चर्चा करते और सभी ने नमक मिर्ची को एक जगह मिला लिया। जिसकी मात्रा लगभग 100 ग्राम मिर्ची और 200 ग्राम नमक थी।

हमने लंच के बाद अपनी पढ़ाई सुचारू रूप से चालू रखी पर बच्चों के व्यवहार से लग रहा था की, उनका पढ़ाई में मन नहीं लग रहा है। उन्हें तो उस भरबुलया का इन्तजार था। दोपहर के एक बज चुके था। अब तक भरबुलया नहीं आया।

कुछ बच्चे कहने लगे, ''सर भरबुलया नहीं आया तो हम क्या करेंगे?''

मैनें कहा, ''हो सकता कल के डर से आज स्कूल में भरबुलया ही नहीं आये।'' सभी बच्चे हँसने लगे और कहने लगे, ''हो सर, भूत कभी डरता है क्या?'' इसी चर्चा के बीच सपना जो पानी पीकर कक्षा में आ रही थी। उसे दूर से एक भरबुलया आता दिखाई दिया। उसने जोर से कहा, ''सर, भरबुलया आ गया।'' सभी बच्चे कक्षा निकलकर बाहर आ गये। मैं भी जल्दी से उठा और भरबुलया की तरफ दौड़ा।

कुछ बच्चे कहने लगे, ''सर आप मत जाओ, कहीं कुछ हों जायेगा।''

मैने उनसे कहा, ''आप देखते रहो, कुछ नहीं होगा।'' कुछ बच्चे मेरे साथ आये और बाकी दूर रूक गये और ध्यान से देखने लगे। मैने दौड़कर उस भरबुलया में सारी की सारी नमक मिर्ची डाल दी। भरबुलया आगे चला गया। सब बच्चे आपस में बात करने लगे। मैने सभी को कक्षा में बिठाया और इस विषय पर बात की।

मैने कहा, ''क्या आपको भूत दिखाई दिया?'' सब बच्चे चुप हो गये।

एक बच्चा बोला, '' पर सर, हमारे मम्मी पापा तो यही कहते हैं?''

''अब आप ही बताओ सही बात कौनसी है? आपने तो देखा था ना। क्या आपको इस भरबुलया में भूत दिखाई दिया था?''

''नहीं सर।'' सबने एक साथ उत्तर दिया।

फिर मैने बच्चों को समझाया कि यह सब वायु दाब के कारण होता हैं। जिसमें मैनें दो गुब्बारे लिए और उनको पास–पास में लटका दिया और उन दोनों के बीच में फूंक मारी। फूंक मारने से दानों गुब्बारे पास–पास आ गये थे। जिसका कारण था फूंक मारने से दोनों गुब्बारों के बीच हवा का दबाव कम हो जाना। इसकी वजह से आसपास की हवा कम दबाब की तरफ दौड़ती है। इसी प्रकार हवा के भंवर का निर्माण होता है और वह हवा भरबुलया बनकर उपर की तरफ उठते हुए चलती है।

शिक्षक– बेनी शर्मा, फरिया कटार

बलराम शर्मा, उम्र–12 वर्ष, समूह–हरियाली

कोई राजा नहीं

एक जंगल था। उस जंगल में एक सियार रहता था। वह बहुत चालाक था। एक दिन उसे एक सुन्दर सरोवर दिखा जिसके किनारे पर बहुत हरी–भरी घांस थी तथा एक बरगद का पेड़ भी था। सियार ने सोचा कि मैं यहीं पर रह जाता हूँ और जंगल के सभी जानवरों का राजा बन जाता हूँ। सियार बरगद के पेड़ के नीचे रहने लग गया। एक खरगोश सरोवर में पानी पीने आया।

सियार बोला, ''पहले मुझे राजा कहो।'' खरगोश ने सियार से राजा कहा और डर के मारे जल्दी जल्दी पानी पीकर वहाँ से चला गया। उसने जंगल में जाकर सभी जानवरों को यह बात बताई। सभी जानवर खरगोश की बात सुनकर सियार के पास पहुँचे। सियार को कोई नहीं जानता था क्योंकि वह जंगल में नया आया था।

एक हिरन बोला, ''अरे सियार तुम खरगोश को क्यों डरा रहे हो? हम इतने ता. कतवर और पहलवान हैं कि हमें राजा की जरूरत ही नहीं है।''

सियार बोला, ''अरे हिरन तुम अभी पहले मुझसे राजा कहो।''

हिरन बोला, ''नहीं, यहाँ राजा की कोई कीमत नहीं है।''

सियार बोला, ''यहाँ का केवल मैं ही राजा हूँ। जो जानवर मुझे राजा नहीं मानेगा मैं उसे मार दूंगा और सारे जंगल को बिखेर दूंगा।''

हिरन बोला, ''अच्छा होगा तुम यहाँ से भाग जाओ नहीं तो हम सब जानवर मिलकर तुम्हें मार डालेंगे।'' सियार डर गया और वहाँ से चला गया।

मनीषा, उम्र–8 वर्ष, समूह–सागर

सोना,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–तिरंगा

जंगल में मंगल

मेरा नाम जंगल है।
मेरे अंदर मंगल है।
शेर, चीता, भालू, बंदर,
खुश रहते हैं मेरे अंदर।
मोर, तोता, मैना, तीतर,
सब रहते हैं मेरे अंदर।
आम, पपीता, बेर, केला,
सजा रहता है फलों का मेला।
खूब करते मौज मस्ती,
झिलमिल रहती उनकी बस्ती।
मेरा नाम जंगल है
मेरे अंदर मंगल है।

अंकिता मीना,
उम्र–10 वर्ष, समूह–रोशनी

मोटू लाल

मोटू लाल पिले–पिले
धम से कुए में गिर पड़े
गप–गप गोते खाते हैं
हाथ हिलाते, चिल्लाते।
कोई मुझे बचाओ राम
मैं आऊगा उसके काम।

मीनाक्षी मीना,
उम्र–11 वर्ष, समूह–संगम

मुकेश, उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

डेंगू

दीपावली कार्यशाला का समय था। इस कार्यशाला में मुझे भाग लेना जरूरी था। मेरा बेटा बिन्दू सवाई माधोपुर में किराये से कमारा लेकर अध्ययन करता था। उसके प्रेक्टिकल चल रहे थे। उसके शिक्षक का मेरे पास फोन आया, उस समय मैं जगनपुरा गाँव में ही था। उन्होंने बताया, ''आपके बच्चे को बुखार आ रहा है।''

मैंने कहा, ''मैं शाम को आकर बच्चे को दिखा दूंगा।'' शाम को जब मैं सवाई माधोपुर गया और मैंने बच्चों को देखा तो बच्चा बिल्कुल कमजोर हो गया था। बच्चे से बात की कि तुमने पहले ही क्यों नहीं बताया?

बच्चा बोला, ''मैंने सोचा कि दवा से ठीक हो जाऊँगा और प्रेक्टिकल खत्म होते ही घर आ जाऊँगा और आपके साथ दिखा दूंगा।''

बच्चे ने कहा, ''पापा, आप मुझे घर ले चलो।'' बच्चा बहुत खबराया हुआ था। मैंने सोचा कि चलो इसे ले चलता हूँ और कुण्डेरा दिखा लूंगा। क्योंकि कुण्डेरा के कम्पाउण्डर की दवा से यह पहले भी ठीक हो गया था। इसलिए मैं सवाई माधोपुर से बच्चे को घर ले आया। सुबह मैं बच्चे को लेकर कम्पाउण्डर के पास गया। उसने बच्चे की जांच की और बताया कि बच्चे को मलेरिया हो गया है। इसे तीन दिन तक लगातार इंजेक्शन लगवाना होगा। मैंने तीन दिन तक बच्चे के इंजेक्शन लगवाये लेकिन बच्चे की तबीयत में कोई सुधार नहीं दिखाई दिया। बच्चे ने खाना भी कम कर दिया और बहुत कमजोर होने लगा। घर पर सभी चिन्ता करने लगे। क्योंकि उस समय डेंगू नामक बीमारी फैल रही थी। पड़ौस में हरिजन बस्ती में एक बच्चे

छाया सैनी, कक्षा–4, राजकीय विद्यालय

के यह बीमारी हो गई थी। उसे जयपुर रेफर कर दिया गया था। वह बच्चा एक गरीब परिवार से था। उसके लगभग अस्सी हजार रूपये खर्च हुए थे। उसकी प्लेटलेट्स कम हो गई थी। प्लेटलेट्स के बारे में बताते हैं कि हमारे शरीर में रक्त के तीन कण होते हैं –

1. आर.बी.सी. – इसके कारण रक्त का लाल रंग होता है और ऑक्सीजन को पूरे शरीर में परिवहन या पहुँचाने का काम करती है।

2. डब्ल्यू.बी.सी. – इन्हें श्वेत रूधीर कणिका कहते है। ये हमारे शरीर के सैनिक हैं। भोजन व श्वसन से आये जीवाणुओं को मारती हैं।

3. प्लेटसलेट्स – ये खून का थक्का जमाने का काम करती हैं। इसकी कमी के कारण रक्त स्त्राव होने लगता है।

उस समय डेंगू की बीमारी के कारण कई बच्चों की मृत्यु हो गई थी। मेरे घर वाले घबरा गये। मेरी हालत खराब हो गई लेकिन मैंने हिम्मत से काम लिया। मैं वापिस उस कम्पाउण्डर के पास गया और कहा, ''बच्चे को आराम नहीं मिल रहा है। मुझे इसमें मलेरिया के लक्षण नहीं दिखाई दे रहे हैं। क्योंकि मलेरिया में ठण्ड लगकर बुखार आता है।''

कम्पाउण्डर बोला, ''भाई साहब मैंने पूरी कोशिश की है, लेकिन इस सारी दवाओं का कोई असर नहीं हुआ है। आप इसे सवाई माधोपुर में डॉक्टर आर.के. जैन के पास ले जओ।''

मैं सुबह जल्दी ही डॉक्टर आर.के. जैन के पास बच्चे को ले गया। वहाँ जाकर देखा तो वहाँ पर काफी भीड़ लगी हुई थी। मेरी आँखों के सामने ही एक बच्चे को डेंगू की बीमारी के कारण जयपुर रैफर कर दिया। डॉक्टर ने कहा, ''इसकी प्लेट्लेट्स कम हो गई है।'' मैं घबरा गया क्योंकि उस बच्चे की तरह ही बिन्दू की हालत थी। दस बजे बाद मेरा नम्बर आया। डॉक्टर साहब से मेरी पहले से ही जानकारी थी। उन्होंने कहा कि मानसिंह पूरी जाँच होने पर ही पता चल सकेगा। बच्चे की पूरी जाँच की गई। डॉक्टर साहब को पूरी रिपोर्ट दिखाई तो कहा, ''बेटा घबराने की आवश्यकता नहीं है। अभी केवल डेंगू के लक्षण दिखाई दिये हैं।''

मैंने पूछा, ''डॉक्टर साहब इसके क्या–क्या लक्षण होते हैं?'' डॉक्टर ने बताया कि तेज बुखार आना, सिर दर्द, उल्टी, हड्डियों में दर्द आदि।

डॉक्टर ने कहा, ''आपको इसे कम से कम छः दिन तक यहाँ भर्ती करवाना होगा।''

मैंने डॉक्टर से कहा, ''डॉक्टर साहब, मै इसे रोज आपके पास लेकर आ जाऊँ तो?'' डाक्टर ने हाँ कह दी लेकिन कहा कि आज तो इसे यहीं भर्ती रहना होगा।

मैं तैयार हो गया। डॉक्टर साहब ने मुझे एक और रोचक बात बताई कि यह बीमारी 'एडिस इजिप्टी' नामक मच्छर के काटने से होती है। जिसे डेंगू की बीमारी है यदि उसे किसी अन्य मच्छर ने काट लिया और वह मच्छर स्वस्थ व्यक्ति को काटता है तो उसे भी डेंगू की बीमारी हो सकती है। इसलिए आप इसे रोज लेकर आ जाना। उस दिन मैं हा. स्पिटल में ही रूका। घर वालों को चिन्ता हो रही थी। डॉक्टर के बताये अनुसार मैंने घर पर फोन करके बताया कि चिन्ता करने की बात नहीं है। डॉक्टर ने कहा है कि बच्चे के डेंगू के लक्षण दिखाई दिये है। घबराने की कोई बात नहीं है। जल्द ही ठीक हो जायेगा। लेकिन उस समय हमारे परिवार पर क्या बीती उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। घर में उस दिन किसी ने खाना भी नहीं खाया। सभी परेशान थे। क्योंकि डेंगू के नाम से ही घबराहट होने लगती हैं।

कृष्णा बैरवा, उम्र–9 वर्ष, समूह–सूरज

डॉक्टर से मैंने पूछा, ''किसी ने कहा था, कि डेंगू की बीमारी में पपीते के पत्ते का एक गिलास ज्यूस पिलाने से बीमारी ठीक हो जाती है।''

डॉक्टर ने बताया, ''लोगों को यह पता नहीं होता है कि किस बीमारी में कौनसी दवा और कितनी मात्रा में पिलानी चाहिए। हाँ यह ठीक है कि पपीते के पत्ते के ज्यूस से डेंगू की बीमारी में आराम मिलता है लेकिन उसकी केवल एक चम्मच ही पर्याप्त होती है। एक गिलास तो बहुत होता है।'' दूसरे दिन मैं बच्चे को लेकर घर गया और उसके बाद छः दिन तक बच्चे को रोज हॉस्पिटल दिखाता रहा। पहले बच्चे का वजन भी कम था लेकिन पाँच दिन बाद बच्चे में काफी सुधार होने लगा और रोज बच्चे का वजन भी बढ़ने लगा। डॉक्टर ने छः दिन बाद कहा कि यदि कोई परेशानी हो जाए तो आप तुरन्त लेकर आ जाना। बच्चे में दिनों दिन काफी सुधार आ गया था। दस दिन बाद तो बच्चा पूर्ण स्वस्थ्य हो गया। तब जाकर घर वालों ने राहत की साँस ली।

मानसिंह सिर्रा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

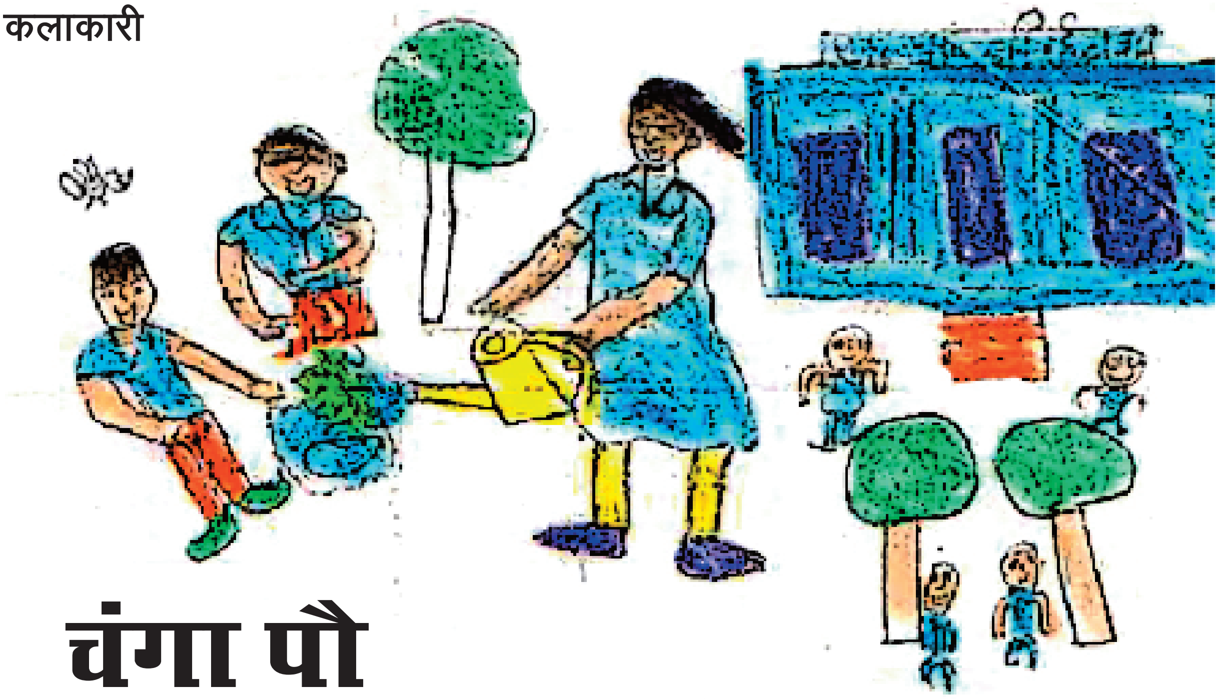

चंगा पौ

मानसिंह सैनी, कक्षा–5, राजकीय विद्यालय, इटावदा

बचपन में एक खेल खेलते हुए देखते थे। जिसे लड़का–लड़की, महिला–पुरूष सभी समान रूचि के साथ खेलते थे। इस खेल के लिए सामग्री के रूप में कोई लागत नहीं आती थी। यह आज के लूड़ो की तरह होता था। जिसे अधिकतम 4 लोग एक साथ खेल सकते थे। खेलने वाले एक कोयला या खड़ी की मदद से जमीन पर खेल का नक्षा बना देते थे जो 25 खानों वाली वर्गाकार आकृती होती थी। इसकी प्रत्येक लाईन में 5 खाने होते थे। जिसको याद रखने के लिए हम एक लाईन ''आलू का साग'' दोहराते थे। इसके आधार पर हम अपने खानों की जांच करते कहीं खाने कम–ज्यादा तो नहीं बन गये। अब बाहर की पंक्ति में स्थित बीच के खाने को क्रास कर देते थे। जो खेलते समय सुरक्षित जगह का काम करता है। इस जगह पर रखी गोटी को कोई मार नहीं सकता है। इसी प्रकार वर्गाकार आकृती के बीचों बीच के खाने को भी क्रास किया जाता था। इस सुरक्षित खाने में जिस खिलाड़ी की सारी गोटियॉ पहले पहुँचती हैं वह सफल माना जाता है।

इसे अधिकतम 4 खिलाड़ी खेल सकते हैं। पासों के लिए 4 इमली के बीज लेकर उन्हे एक तरफ से घिस कर सफेद कर लेते हैं या फिर 2 अरहर/सरसों के पासों की तीली लेकर उन्हें बींच से चीर कर भी 4 पासे बनायो जा सकते हैं। पासों के खुलने के आधार पर मिले नम्बरों के अनुसार खिलाड़ी अपनी गोटी आगे बढ़ाता है। प्रत्येक खिलाड़ी वर्ग के किनारे पर बने क्रास के ऊपर अपना घर बनाता है। जिसमें उसकी 4 गोटियां रखी होती हैं। जब तक पासों से 1 अंक नहीं आता तब तक गोटी घर से बाहर नहीं आ सकती। हम इसे ''पै'' बोलते थे।

1 अंक पाने के लिए – 1 पासा सीधा और 3 पासे उल्टे होना चाहिए

2 अंक के लिए – 2 पासे सीधे और 2 पासे उल्टे होना चाहिए।

3 अंक के लिए – 3 पासे सीधे और 1 पासा उल्टा होना चाहिए।

4 अंक के लिए – चारों पासे उलटे होने चाहिए।

8 अंक के लिए – चारों पासे सीधे होने चाहिए।

'चार' और 'आठ' अंक आने पर खिलाड़ी को फिर से पासे चलने का मौका भी मिलता है। जो एक तरह से क्रिकेट का फ्री हिट पर बाऊन्ड्री पड़ने जैसा है जो खेल की दिशा ही बदल देता है। खिलाड़ी 8 अंक का उपयोग अपनी गोटी घर से बहार निकालने के लिए भी कर सकता है। खिलाड़ी अपनी गोटी घड़ी के विपरित दिषा में आगे बढ़ाते हैं। वर्ग के अन्दर वाली लाईन में प्रवेश करने का रास्ता प्रत्येक खिलाड़ी के अपने घर के क्रास वाले खाने के पीछे से होता है। परन्तु जब तक हम दूसरे खिलाड़ी की कम से कम एक गोटी नहीं मार देते तब तक अन्दर नहीं जा सकते हैं। ऐसे में कई बार खिलाड़ी की गोटी बाहर के सर्किल में ही घुमती रहती है। एक दूसरे की गोटी मारकर तो खिलाड़ी खेल का रूख ही बदल देता है जैसे सांप–सीढ़ी के खेल में सांप का काटना। वर्ग के एक दम बीच वाले खाने में प्रवेश भी अपने घर के क्रास के सामने के खाने से ही किया जा सकता है। इसके लिए कई बार सही अंक आने तक इन्तजार करना होता है। अकेली गोटी होने पर तो उसे आगे बढ़ना पड़ जाता है जिसकी वजह से एक अनावश्यक फेर लग जाता है। यानी की खिलाड़ी के लिए प्राप्त अंको के अनुसार अपनी गोटी को आगे बढ़ाना जरूरी है। जब सभी गोटियां बीच के खाने में पहुँच जाती हैं। तो उनको बाहर भी निकालना होता है। अर्थात वापस अपने घर पहुँचाना हैं इसके लिए आपकों वहीं 1 अंक लाना होगा। जिसकी चारों गोटियाँ पहले घर पहुंच जायेंगी वो खिलाड़ी सफल माना जायेगा।

पवन प्रजापति, कक्षा–4, राजकीय विद्यालय, हरिपुरा

विष्णु गोपाल

विस्थापन 'कठुली पादड़ा'

सवाई माधोपुर शहर से 10 बच्चे और 5 शिक्षक रणथम्भौर जंगल से बाहर निक.ाले गये गाँव कठुली पादड़ा व अन्य स्थानों के लिए बस से गये। बच्चों को बस भरने से पहले ही मैने सीटो पर बिठाकर कण्डक्टर को कह दिया था कि मैं इनका किराया दे दूंगा, आप इनको खड़ा नहीं करोगे। परन्तु बस में भीड़ बढ़ती गयी और किराये के लालच में उसने बच्चों को खड़ा करना शुरू किया। मेरे कहने पर भी

छोटी बैरवा, कक्षा–6, उदय पाठशाला फरिया

कुछ बच्चों को सामान पर बिठाया और शेष को भी सटा–सटाकर बिठाया। धीरे धीरे बस फैवीकॉल का विज्ञापन लगने लगी। रास्ते के साथियों को उतारते हुए मैं 7 बच्चों के साथ फरिया पहुँचा। यहाँ से रेणू जी हमारे साथ शामिल हुई। हमें कठुली पादड़ा जाना था। रास्ता नहीं जानने के कारण मैं रह रहकर कण्डेक्टर से पूंछ लेता था ''अब कितनी दूर है? जब आ जाए तो बता देना हमें पता नहीं''। लगभग ढाई घन्टे के सफर के बाद हम कठुली पादड़ा के बस स्टेण्ड पर उतरे। श्यामा जी यहाँ हमारे इन्तजार में खड़ी थी। मैने श्यामा जी से पूछा, ''गाँव कहाँ है?'' श्यामा जी ने हाथ

के इशारे से कहा यहीं पास में है। ये सड़क सीधी गाँव में जाती है उन्होंने अपनी लाल कार में बच्चों को बिठाया जगह कम होने के कारण मैं कार में नहीं बैठा और कार चली गई। मौसम साफ था, धूप शरीर को सुकून दे रही थी। खेतों में सरसों की फसल फूलों से लदी थी। खेत के चारों और कटीली डालियों व लकड़ियों से बाड़ कर रखी थी। जब तक कार लौटकर आई मैं गाँव में आ चुका था। गाँव में प्रवेश करते ही एक बड़ा सा कुआ है जिस पर बहुत सारे लोग अपनी अपनी रस्सियों से पानी निकाल रहे थे। कुछ महिला, पुरूष और बच्चे कुए पर ही नहाने–धोने का काम कर रहे थे। नहाने में साबुन और पीली मिट्टी का उपयोग समान रूप से किया जा रहा था। गाँव में सभी के घर पक्के थे जिन पर दरवाजे लगे थे। दीवारों पर प्लास्तर नहीं किया गया था।

गाँव में हमारी मुलाकात एक वृद्ध चिरंजी गुर्जर से हुई। इन्होंने मिलते ही लपककर हमारे लिए चारपाईयाँ बिछा दी और खुद जमीन पर ही बैठ गये। मेरे कहने के बाद भी वो जमीन पर ही बैठे रहे। उनके हाथों में दो पीपियां थी। जब मैने उनसे पूँछा कि, ''आप कहीं जा रहे थे?''

उन्होंने कहा कि, ''कैरोसिन मिल रहा है, तो लेने जा रहा हूँ, पर अब आप आ गये तो बाद में जाऊंगा''।

मैने कहा, ''गाँव में लाईट नहीं है?''

उसने कहा, ''लाईट तो है पर आती कितनी है और कैरोसीन का तेल तो खेतों में पानी देने के लिए इंजन में डालते है।''

जब मैंने पूछा इस बार फसल कैसी है? तो बोले कैसी होगी? पथरीली जमीन उपर से 600 फिट गहरा पानी सिंचाई करें तो कैसे करें। कुछ करते हैं तो ये जंगल के जानवर रात–दिन खेतों को उजाड़ते रहते है।

मैंने कहा, ''जंगलात वालों से कहते नहीं?''

चिरंजी, ''कहते है, पर क्या फायदा? जंगल के जानवर हमारे पसीने की कमाई को उजाड़े तो कुछ नहीं और हम अगर अपनी बकरी के लिए कुछ पत्ते भी काट लें तो जुर्माना कर देते है।''

(वर्षा के बाद जंगल का घास खत्म हो जाने के कारण जंगल के शाकाहारी जानवर जंगल छोड़कर खेतों में आ जाते हैं। और जाते नहीं, जिसके कारण मांसाहारी जानवर भी इनकी तलाश में इनके पीछे–पीछे जंगल से बाहर आ जाते हैं)

''बाबा यहाँ कोई पेड़ नहीं है?'' मैनें कहा।

''कहाँ से होंगे? पेड़ तो वहाँ थे जहाँ हम रहते थे। ये तो पथरीली जमीन है। जंगलात ने इस उजाड़ में लाकर पटका है हमें।''

''बाबा पेड़ों के बिना कैसा लगता है?'' मैनें फिर सवाल किया।

बाबा ने जैसे अपना दर्द बताते हुए कहा, ''बिना पानी के मछली को कैसा लगेगा? हम तो आधे समय पेड़ों पर ही रहने वाले हैं। पेड़ों पर खेलना, पेड़ों पर सोना, पेड़ों पर बैठकर खाना, पेड़ों पर बैठकर रखवाली करना हमारा तो घर, खेती, पशुपालन, भोजन, त्यौहार, मौजमस्ती सब पेड़ों से है।''

''बाबा घर में पशु हैं?'' मैने सवाल करना जारी रखा।

बाबा भी जैसे सब बताने के लिए तैयार था, ''अब क्या है? पहले 45 गाय और 10 भैंसे थी। अब 1 गाय और 4 भैंस रह गयी इनका भी पेट नहीं भरा जाता।''

अब क्या काम धन्धा करते हो?

क्या करेंगे? हमें कुछ और आता ही नहीं खेती हो नहीं पाती, पशुपालन रहा नहीं। मैं तो कहीं नहीं जाता। बच्चे मजदूरी करते हैं। समय–समय की बात है। हमने मज. दूरी तो क्या कभी किसी की नौकरी भी नहीं की। हमारे घर में दूध, छाछ, घी इतना होता था कि इन्सान तो क्या घर के जानवर तक खाते–पीते थे। आज हमारे बच्चों को चाय के लिए दूध खरीदना पड़ रहा है।

बाबा कोई गीत सुनाओ

बेटा गीत ऐसे नहीं गवते हैं, गीतों के लिए तो जंगल चाहिए, पशु चाहिए पानी के झरने चाहिए, ग्वालों के झुण्ड चाहिए सब छूट गया। शादी ब्याह में गाते है। आज कल तो कैसिट से सुन लेते है। हम तो खुद ही बना कर गा लेते थे।

सरकार ने बदले में कुछ दिया नहीं?

दिया है एक–एक घर को 6–6 बीघा जमीन 8000 नगद और तीन घरों पर एक बोर दिया है। इसका क्या करें? हमें तो जंगल की पोन अच्छी लगती है। गाय भैंसों और जंगली जानवरों की आवाजें। जंगली रास्ते, मस्ती से चरती भैंसे और छांव में बैठकर आराम से रसिया गाना अच्छा लगता है।

बाबा को कैरोसीन लेने जाना था इसलिए वह उठा और बोला ''अब तो बस खाने पीने की चिंता में ही लगे रहते है। वर्ना तो आप को छोड़कर नही जाता।'' कहकर बाबा चला गया। मैं सोचने लगा कि ऐसे ना जाने कितने लोग होंगे जो अब सिर्फ अतीत को याद करके जीयेंगे। भविष्य से कभी पटरी बिठाना इनके लिए आसान नहीं है। इनकी छीनी गयी हवा, छांव, गीत, घर, आंगन, खेत , जंगल की संस्कृति को रूपयों से नहीं तोला जा सकता। यह तो वैसा ही है जैसे कश्मीर के व्यक्ति को रेगिस्तान में भेज दिय जाए। जंगल के जीव और जंगल के लोग जंगल में ही खुश रह सकते हैं किसी चिड़िया घर में नहीं।

विष्णु गोपाल, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

माथापच्ची

दीपिका मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–रंगोली

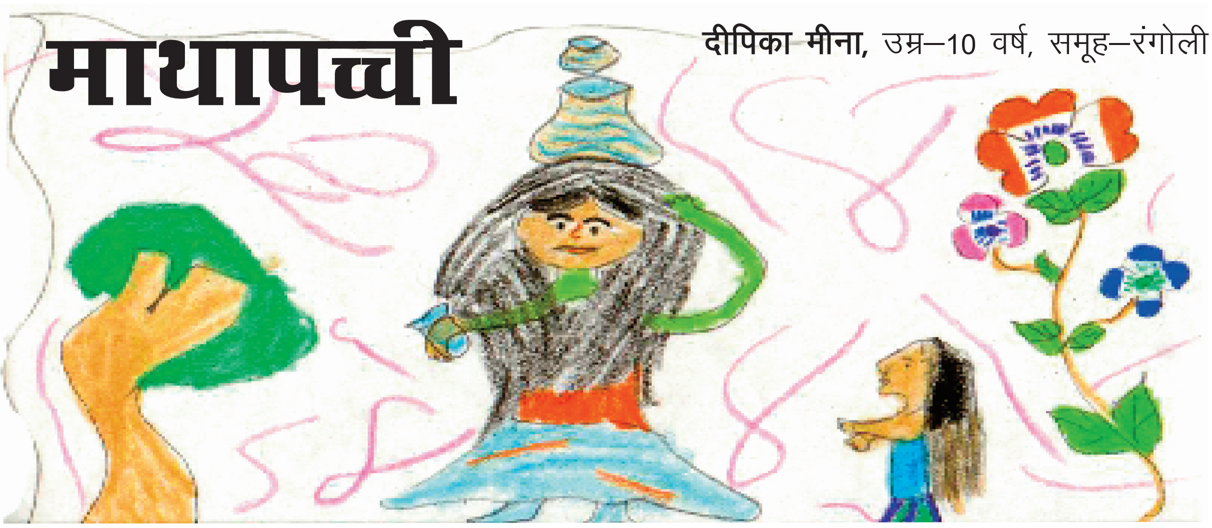

1. एक व्यक्ति के पास 3 थैली है। तीनों थैली लेकर वो नदी किनारे गया। तीनों थैली में वो 30–30 नारियल भरता है (एक थैली में 30 नारियल की ही जगह है) ऐसे करके वो 90 नारियल लेता है। घर जाते समय रास्ते में 30 टोल नाके आते हैं। इन टोल नांको के नियम कुछ ऐसे हैं की आप के पास जितनी थैलियां हैं उतने नारियल वहाँ देने पड़ते हैं। तो बताओ वो व्यक्ति घर पर ज्यादा से ज्यादा कितने नारियल ले जा सकता है?

2. जूता + जूता + जूता = 30
   जूता + लड़का + लड़का = 20
   लड़का + सीटी + सीटी = 13
   जूता + लड़का + सीटी = ... ?

मनीषा सैनी, उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

हीहीही ठीठीठी

1. एक तोता एक कार से टकरा गया, तो कार वाले ने उसे उठाया और पिंजरे में डाल दिया। दूसरे दिन जब तोते को होश आया, वह बोला, आईला.... जेल......
   कार वाला मर गया क्या ?

2. एक बच्चे ने दूसरे बच्चे से पूछा – क्या तुम चीनी भाषा पढ़ सकते हो?
   दूसरे बच्चे ने कहा – हाँ, अगर वह हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी हो तो...

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

एक बार एक जंगल था। उस जंगल में एक नदी थी। उस नदी में बहुत सारी रंग–बिरंगी, छोटी–बड़ी मछलियाँ रहती थी। बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों का बहुत ध्यान रखती थी। एक दिन उस नदी में एक मगरमच्छ आ गया। ....

शिक्षिका **सपना राजावत** *द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

सविता नायक,
उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

सावन–भादो का महिना आया
मेलों के संग रिमझिम बरखा लाया।

शिक्षक **अशोक शर्मा** *द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

वर्षाना बैरवा,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–सूरज

पहेलियों के ज़वाब –

1. 25 2. 19

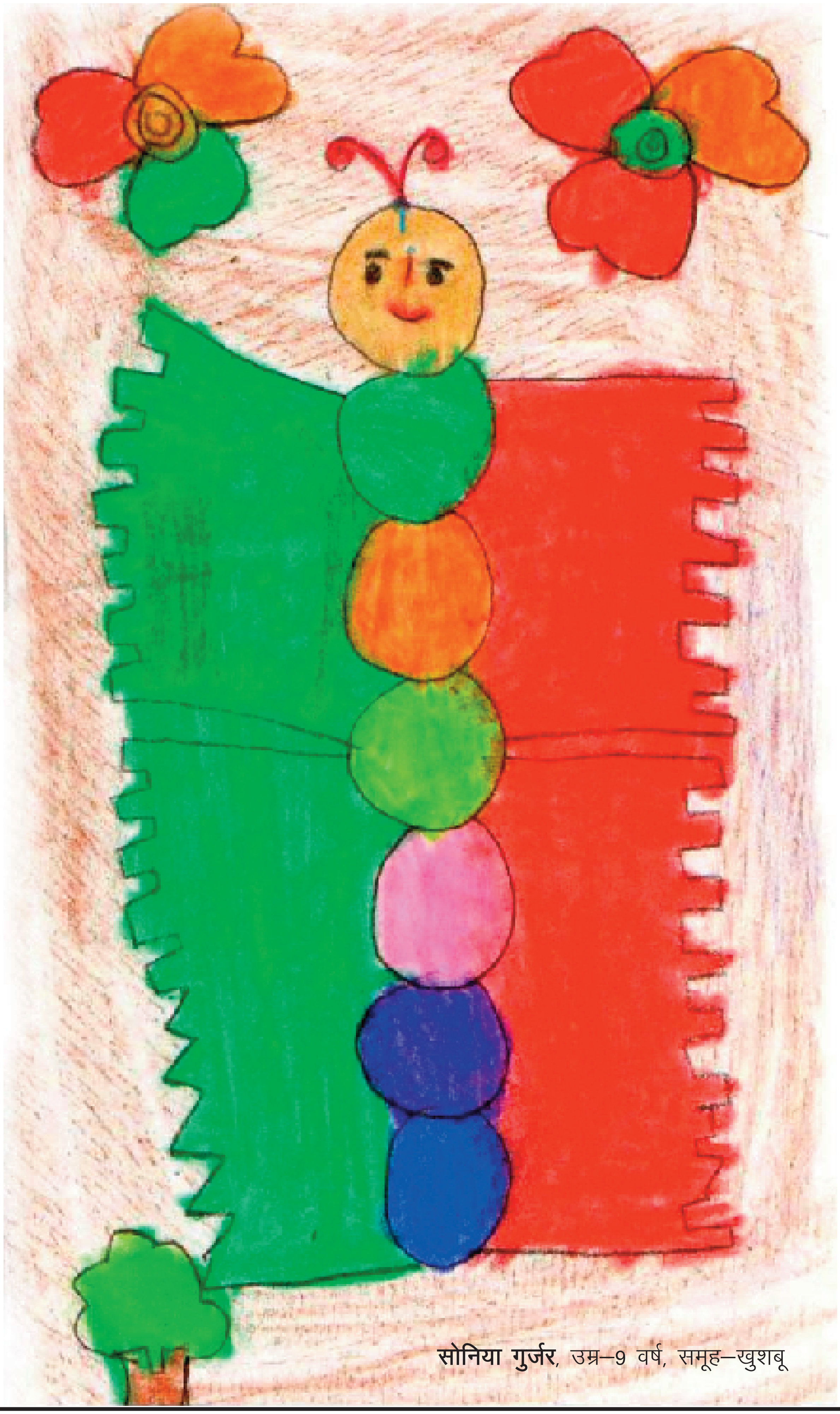

सोनिया गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू